YSR & VKK-HMS/2B & 2C/2.00 & 2.05

The House reassembled after lunch at six minutes past two of the clock, MR. DEPUTY CHAIRMAN in the Chair

---

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, I have a point of order. …(Interruptions)…

MR. DEPUTY CHAIRMAN: What is the point of order? …(Interruptions)… Why do you want to create problem for me?

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, this is the second day in a row that the House is beginning at five minutes past two. Although we have been sitting here, waiting for the House to begin at two, the Minister of Parliamentary Affairs is also not here. The job of ensuring quorum is that of the Government. Sir, this cannot be allowed to continue like this. …(Interruptions)…

MR. DEPUTY CHAIRMAN: There was no quorum. …(Interruptions)… That is the reason. …(Interruptions)…

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, you have to insist that we begin at two. …(Interruptions).. We have to begin at 2 o'clock. …(Interruptions)…

MR. DEPUTY CHAIRMAN: It was lack of quorum. …(Interruptions)…

SHRI JAIRAM RAMESH: Then, please do not adjourn till 2 o'clock. …(Interruptions).. Please say, 'adjourned till you have the quorum'. …(Interruptions)… Please say that.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shri Jairam Ramesh, it was delayed by five minutes because of lack of quorum. But, your point is well taken. I would request the Members to ensure that they are present at 2 p.m. itself so that the House commences on time. …(Interruptions)… No, there are other Ministers. …(Interruptions)… I need not insist for a particular Minister. I want Ministers. That's all. …(Interruptions)…

THE MINISTER OF CIVIL AVIATION (SHRI ASHOK GAJAPATHI RAJU PUSAPATI): Sir, Ministers are always present. …(Interruptions)…

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. …(Interruptions)… Now, Shri Ramkumar Verma. Kindly adhere to time. Ramkumar Vermaji, your time is ten minutes. You can start and speak for ten minutes.

MOTION OF THANKS ON PRESIDENT'S ADDRESS (CONTD.)

श्री रामकुमार वर्मा (राजस्थान) : ऑनरेबल डिप्टी-चेयरमैन सर, मैं सब से पहले आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे माननीय राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर बोलने के लिए समय दिया।

सर, यह मेरे लिए महत्वपूर्ण अवसर है क्योंकि मैं पहली बार बोल रहा हूं। इसलिए मैं अनुरोध करूंगा कि मेरी स्पीच को maiden speech माना जाए। सर, माननीय राष्ट्रपति जी के संयुक्त सत्र में दिए गए अभिभाषण को एक ऐतिहासिक संयुक्त सत्र के रूप में माना गया। यह ऐतिहासिक इस रूप में माना गया कि पहले आम बजट जो फरवरी के अंत में होता था, उसे उससे पूर्व 1 फरवरी को प्रस्तुत किया गया और साथ में रेल बजट प्रस्तुत किया गया। भारत सरकार और उसके नेतृत्व के निर्णय से निश्चित ही राष्ट्रपति जी का अभिभाषण एक तरह से प्रशंसनीय अभिभाषण रहा। उससे मंत्रालयों को बजट राशि का समय पर आवंटन होगा, दूसरे रेल बजट जो पहले अलग से होता था, उसका आम बजट में विलय होने से निश्चित है कि उससे बहुत सारा समय बच गया। महोदय, मैं समझता हूं कि इससे भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों द्वारा जो जन-कल्याणकारी योजनाएं लागू की जाती हैं, उनको समय पर राशि का आवंटन मिलेगा और उसमें एक गति आएगी और उनमें कोई रुकावट नहीं होगी।

(2 डी/एएससी पर जारी)

ASC-BHS/2D/2.10

श्री रामकुमार वर्मा (क्रमागत) : माननीय राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में जनशक्ति को नमन किया गया है। महोदय, इस सदन में मेरा यह पहला अवसर है। पूर्व के राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में या इस तरह के किसी भी अवसर पर नमन किया गया या नहीं

किया गया मुझे नहीं मालूम, लेकिन इस अभिभाषण में नमन किया है। भारत की जनता की वह शक्ति है, जिसके अंदर इतनी ताकत है और इतनी समझदारी और परिपक्वता है कि उसको नमन करना अतिशयोक्ति नहीं है। माननीय राष्ट्रपति जी ने अपने अभिभाषण में इस जनशक्ति को नमन करने का काम किया है। यह नमन किसी एक पंक्ति के द्वारा नहीं किया है। मैं इसके लिए यह कहना चाहूंगा कि भारत की जनता साक्षरता में कम हो सकती है। यह जनता गरीब है, मजदूर है, किसान है, दलित और शोषित है। इसके साथ ही साथ इसमें एक महिला वर्ग भी इतना है कि वह साक्षरता में पुरुषों की तुलना में कम है, लेकिन इस भोली-भाली जनता के अंदर इतनी समझ है, इतनी परिपक्वता है कि उसकी ताकत से देश का नेतृत्व करने वाला कोई व्यक्ति यदि देश हित में और जनता के हित में कार्य करता है, तो इस देश की जनता उसको अपना समर्थन और शक्ति देती है, जिसको नमन करना हमारा परम कर्तव्य बनता है।

मैं इसके लिए दो उदाहरण देना चाहूंगा। मैं ज्यादा नहीं बोलूंगा, क्योंकि समय की सीमा है। महात्मा गांधी जी देश के राष्ट्रपिता कहलाए, Father of the Nation. जब महात्मा गांधी जी ने स्वतंत्रता आंदोलन चलाया, तो उस समय देश के अंदर ब्रिटिश हुकूमत थी, जिसने 200 वर्षों तक शासन किया और उससे पहले भी देश गुलाम हुआ था। उस समय अंग्रेज़ी शासन की जड़ें बहुत मजबूत थीं और उन्होंने सोचा था कि इस देश से ये जड़ें नहीं निकलेंगी। यह देश हमारे अधीन रहेगा और हम इस देश पर राज करते रहेंगे, लेकिन महात्मा गांधी जी ने देश की स्वतंत्रता के आंदोलन का नेतृत्व किया। इस कार्य में देश की जनता ने उनका साथ दिया। मैं नहीं कहता कि महात्मा गांधी इस कार्य में केवल अकेले व्यक्ति थे, लेकिन उन्होंने देश की जनता के भाव,

उसके विचार और संस्कृति को देश की धरोहर समझा। उन्होंने यह भी समझा कि इस देश की जनता के दिल और दिमाग में राष्ट्रीयता की एकता है और राष्ट्र के लिए समर्पित है, महात्मा गांधी जी ने इसको पहचाना। इसमें उद्धरण भी दिया है,चम्पारण के सत्याग्रह का शताब्दी वर्ष। चम्पारण के सत्याग्रह का वह समय निश्चित ही नहीं भूला जाएगा। गांधी जी ने इस बात को महसूस किया कि मेरे देश की जनता गरीब है। उसके पास पहनने के लिए कपड़े नहीं और खाने के लिए रोटी नहीं है। इस ब्रिटिश हुकूमत में रहते हुए निश्चित है कि देश के करोड़ों गरीब लोग जो शोषित हैं, इनको आजादी की जरूरत है। वे जनता के साथ में मिलकर चले और पूरे देश में उन्होंने भ्रमण किया। देश की जनता को उनके नेतृत्व में विश्वास जगा और सबने मिलकर इस देश को आजादी दिलाई। यह जनशक्ति का एक परिचय था। यदि मैं इसी रूप में कहूं कि Father of the Nation, तो वे न केवल भारत में बल्कि विश्व में एक अद्भुत व्यक्तित्व के रूप में उभरे। उन्होंने अहिंसा के मार्ग पर चलकर देश से ऐसी हुकूमत को दूर किया।

मैं इस अवसर पर भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी का नाम लेना चाहूंगा कि उनको भी इस जनशक्ति ने समझा और अम्बेडकर जी ने इस जनता के दर्द को समझा। उन्होंने विभिन्न परिस्थिति में जिस प्रकार से अध्ययन किया और यहां की परिस्थितियों को समझा कि भारत में विभिन्नता है, बहुत सारी विषमताएं हैं और गरीबों के साथ क्या होता है। जब उन्होंने करोड़ों लोगों की पीड़ा को समझा, तो उसी का रिजल्ट निकला कि इस देश की जनशक्ति के जो करोड़ों लोग गरीब थे, जो दलित थे, उनके साथ मिलकर उन्होंने एक प्रण और संकल्प लिया। इसी कारण उन्होंने भारत को

एक अनूठा संविधान दिया। आज डॉ. अम्बेडकर जी को भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में भारत के संविधान निर्माता के रूप में देखा जाता है।

सर, मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि आज माननीय राष्ट्रपति जी के अभिभाषण में जो जनशक्ति के नमन की बात है, यह नमन भारत सरकार और भारत सरकार के नेतृत्व के द्वारा किया गया है।

(2E/LP पर जारी)

-BHS/RL-LP/2.15/2E

श्री रामकुमार वर्मा (क्रमागत) : उसका कारण यह है कि भारत सरकार के नेतृत्व में जिस दिन उन्होंने इस देश की बागडोर संभाली, तब उन्होंने यह प्रण किया था कि मैं भारत के एक प्रधान सेवक के रूप में कार्य करूंगा, न कि एक प्रधान मंत्री के रूप में। दिल और दिमाग में पीड़ा थी, दर्द था कि इस देश की जनता में वह ताकत है, जिसने मुझे यहाँ पर भेजा है। उनके ये महापुरुष उदाहरण भी थे - वे महात्मा गाँधी जी का उदाहरण दें, डॉ. अम्बेडकरजी का दें, औरों का दें। उन्हें यह भी मालूम था कि अगर व्यक्ति कोई कार्य करता है तो इस देश की अनेकता में एकता का एक बहुत प्रखर भाव इस देश के लोगों के अंदर है। भारत सरकार के नेतृत्व में आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी ने देश को नमन करते हुए, इस संसद को नमन करते हुए, निर्धन को, गरीब को, किसान को, मजदूर को और वंचितों को नमन करते हुए कहा था कि मैं आपका सेवक हूं और उस तरह के कार्य करूंगा जिससे कि देश के करोड़ों-करोड़ दलित वर्ग के लोग, जिनके मैंने वर्षों से बहुत-से नारे, स्लोगन्स सुने हैं, लेकिन उनके कार्य नहीं हुए हैं, मैं उनके कार्य पूरे करूंगा।

आदरणीय उपसभापति जी, मैं इस संबंध में कहना चाहूंगा कि "जन-धन योजना", एक ऐसी योजना है, जिससे इस देश के आम आदमी को, गरीब आदमी को जोड़ा गया। जोड़ने का यह निर्णय इसलिए लिया गया ताकि भारत के banking system से जो किसान हैं, मजदूर हैं, जो कम पढ़े-लिखे व्यक्ति हैं, वे सब इससे जुड़ें। भारत की सत्तर साल की आजादी में, या यूँ कहें कि banking nationalization से लेकर बाद में, अभी भी, पिछले वर्षों में, भारतीय रिज़र्व बैंक के द्वारा बार-बार यह प्रयास किया गया कि लोग देश के अंदर banking system को जानें, पहचानें। उन्होंने इस तरह की पहल की है और इसके लिए वे जनता के द्वार भी गए। इसके और भी प्रोग्राम किए गए।

इसमें फायनेंशियल लिटरेसी और इंक्लूज़न की बात कही गई, लेकिन यह इतना सफल नहीं हुआ। भारत की सरकार के नेतृत्व में इसका आह्वान किया गया। लोग वर्षों से banking system से नहीं जुड़ रहे थे, लेकिन "जन-धन योजना" से यह संपन्न हुआ। इस योजना के आह्वान के साथ यह कार्य किया गया। यह एक गर्व की बात है कि 26 करोड़ से अधिक लोगों ने खाते खुलवाए। इतना ही नहीं 13 करोड़ लोगों को सामाजिक सुरक्षा की जो कल्याणकारी योजनाएँ थीं, उनसे जोड़ा गया और 47,000 करोड़ रुपये का अमाउंट खातों के अंदर आया। यह एक छोटी-सी बात नहीं थी। जब "जन-धन योजना" की बात आई, तो यह एक कल्पना के रूप में है, लोगों ने इस तरह का rumour भी फैलाया था।

डिप्टी चेयरमैन सर, इस देश में जो गरीब है, उसके लिए यह है ...(समय की घंटी)...जन-धन के अकाउंट खोले जाएंगे। सर, क्या आपने मुझे दस मिनट दिए हैं?

एक माननीय सदस्य : इनकी मेडन स्पीच है।

श्री उपसभापति : मेडन स्पीच है?

श्री रामकुमार वर्मा : अच्छा, दस मिनट हो गए हैं।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Take two more minutes.

SHRI RAMKUMAR VERMA: Sir, it is my maiden speech**.**

MR. DEPUTY CHAIRMAN: It is not your maiden speech.

श्री रामकुमार वर्मा : मैं कहना चाहूंगा कि जो योजनाएँ बनीं, जो कल्याणकारी योजनाएँ..(व्यवधान)..

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Vermaji, you made your maiden speech on 2/8/16.

श्री रामकुमार वर्मा : सर, 2/8/16 को तो मैंने हल्का सा, पाँच एक मिनट का बोला था।..(व्यवधान)..

श्री उपसभापति : मैं क्या करूँ? What can I do? So, you take two more minutes. Okay.

श्री रामकुमार वर्मा : फाइव मिनट्स और दीजिए। उपसभापति जी, मैं यह निवेदन करना चाह रहा था कि आज "जन-धन योजना" और "उज्ज्वला योजना" के द्वारा जो इस तरह का कार्यक्रम हुआ है, उसने यह सिद्ध किया है कि भारत की जनता में दान करने की कितनी क्षमता है और देश को सुधारने की कितनी प्रवृत्ति है। भारत की जनता ने यह कार्य किया है। सब्सिडी के बारे में मैं समझता हूं कि गरीब, सपने में भी यह नहीं सोचता था कि उसको मिलेगी। सर, मैं भी इसका भुक्तभोगी हूं। 1985 में जब मेरे घर

पर चूल्हा जलता था, तो मैं सोचता था कि मुझे गैस कैसे मिलेगी? उस समय यह देखा जाता था कि यदि 20 हजार रुपये होंगे, तो गैस मिलेगी। मुझे यह कहते हुए बहुत खुशी होती है और मैं इसके लिए माननीय राष्ट्रपति महोदय का धन्यवाद करना चाहता हूं कि देश में 0.2 करोड़ लोगों ने सब्सिडी छोड़ी और 1.5 करोड़ ऐसे लोग, जो सपने में भी नहीं सोचते थे कि हमारे लिए कभी धुआँरहित गैस का चूल्हा होगा, उनको सुविधा मिली। इस तरह "स्वच्छ भारत अभियान" की बुनियाद के लिए लोगों ने जन आंदोलन किया। उन्होंने स्वच्छता की बात करके सोचा था कि कहाँ स्वच्छ भारत करने चले? लेकिन यह देखकर अच्छा लगता है कि आज 1,40,000 गाँवों में, 4.5 से ज्यादा शहरों में, 77 ज़िलों में और 7 राज्यों ने अपने क्षेत्र को खुले में शौच से मुक्त कर दिया है। यह घोषित भी किया गया है।

(LP/2F पर जारी)

DC-LP/2.20/2F

श्री रामकुमार वर्मा (क्रमागत) : आदरणीय उपसभापति जी, इसी के साथ मैं यह भी कहना चाहूंगा कि 8 नवंबर, 2016 को जिस तरह से डिमॉनिटाइजेशन किया गया, यह डिमॉनिटाइजेशन भारत के उन करोड़ों-करोड़ गरीबों के लिए था, उन शोषित वर्गों के लिए था, किसानों के लिए था, मजदूर वर्ग के लिए था। दो नंबर का काला धंधा करने वालों ने देश में इस तरह का माहौल पैदा कर दिया था कि भ्रष्टाचार चरम सीमा पर पहुंच चुका था और गरीब व्यक्ति, जो मेहनतकश व्यक्ति था, उसको न्याय नहीं मिल रहा था। वे उसकी मेहनत की कमाई को, दो नंबर का काला धन करते थे। उससे निश्चित ही यह हुआ कि काले धन पर रोक लगी, भ्रष्टाचार पर रोक लगी, जाली नोटों

पर रोक लगी। आतंकवाद को और हवाला मार्किट को.. (समय की घंटी)..बहुत बड़ी बुराई का अंत हुआ। ..(व्यवधान)..

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, please conclude.

श्री रामकुमार वर्मा : इस तरह से भारत सरकार के द्वारा, उनके नेतृत्व में ये अभूतपूर्व निर्णय हुए। डिप्टी चेयरमैन सर, मैं कहता हूं कि हम दलित समाज की बातें बहुत करते हैं, लिखित पीड़ा भी करते हैं, लेकिन दलित समाज के लिए बाबा साहेब अम्बेडकरजी ने कहा था रिज़र्वेशन हो ताकि यह वर्ग आर्थिक क्षेत्र में मजबूत हो। इसके लिए रिज़र्वेशन की पहल अवश्य की गई, लेकिन 70 साल तक भी implementation नहीं हुआ। आज भारत सरकार के नेतृत्व में यह किया गया। जब व्यक्ति का आर्थिक विकास होगा, तभी उसका शैक्षणिक विकास होगा। उसके आर्थिक विकास के लिए ही इस तरह की जनकल्याणकारी विभिन्न योजनाएँ बनीं। मैं कहता हूं कि 84 योजनाओं में से 50 परसेंट से ज्यादा योजनाएँ, चाहे वह Stand-up योजना हो, मुद्रा बैंकिंग योजना हो, Start-up योजना हो, लाभकारी योजनाएँ हैं। जो "दीनदयाल ग्राम ज्योति योजना" है, यह प्रधान मंत्री जी की किसानों के लिए योजना है। आज उनको इस योजना से काफी राहत और आशा मिली है कि इस देश के अंदर ऐसा नेतृत्व आया है जो गरीबों का मसीहा होगा।..(समय की घंटी)..गरीबों की सुनेगा। मैं आपको इस पर धन्यवाद देते हुए माननीय राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर धन्यवाद व्यक्त करता हूं। जय भारत।

(समाप्त)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I know that Shrimati Viplove Thakur is to speak next. She is a very generous hon. Member. Shri Prem Chand Gupta had

requested that since he has to go early on an urgent matter, I am allowing him with your permission.

SHRIMATI VIPLOVE THAKUR: Okay, Sir.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: She is very generous.

श्री प्रेम चन्द गुप्ता (झारखंड) : ये बड़ी बहिन हैं।

माननीय उपसभापति महोदय, राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव पर बोलने का आपने मुझे मोका दिया है और वह भी आउट ऑफ टर्न दिया है, इसके लिए मैं आपका बहुत आभारी हूं। उपसभापति जी, राष्ट्रपति जी हमारे माननीय हैं, हमारे देश के संविधान के सर्वमान्य संरक्षक हैं, हम उनका बड़ा सम्मान करते हैं, लेकिन उनके द्वारा दिए गए अभिभाषण में सरकार की जिन नीतियों को हाइलाइट किया गया है, हम उससे सहमत नहीं हैं।

श्रीमान् जी, देश का जो किसान है, जो देश का अन्नदाता है, जो अपनी मेहनत और पसीने से, मेहनत करके, देश के सवा सौ करोड़ लोगों का पेट भरता है, देश के लोगों के लिए अनाज पैदा करता है, आज उसकी बड़ी दुर्दशा है, उसकी हालत बहुत खराब है, चिंताजनक है।

श्रीमान् जी, उसको खाद नहीं मिलती, बीज नहीं मिलता और नोटबंदी ने तो उसकी और भी बरबादी कर दी। आज ये हालात हैं, आप सभी लोगों ने कल भी टी.वी. पर देखा होगा कि टोमेटो सड़ रहा है, पर कोई खरीदार नहीं है। किसान को उसके प्रॉड्यूस का जो पैसा मिलना चाहिए, वह नहीं मिल रहा। आप लोगों ने जो वायदा किया था कि किसान की जो लागत होगी, उस लागत पर हम किसान को कम से कम 50

प्रतिशत मुनाफ़ा देंगे, उसका क्या हुआ? सर, हालात ये हैं कि कोल्ड स्टोरेज वालों ने पोटेटो अर्थात् आलू की फसल को बाहर निकालकर फेंक दिया, क्योंकि किसान उनके चार्जेज़ पे नहीं कर पाए।

(KLG/2G पर जारी)

KLG-KR/2G/2.25

श्री प्रेम चन्द गुप्ता (क्रमागत): आज माननीय राम गोपाल जी नहीं हैं, इलेक्शन में बिजी हैं, हम लोग भी शाम को वहीं जा रहे हैं। श्रीमान् जी, इस एरिया में हजारों टन पोटेटो, आलू सड़ रहा है, क्योंकि 50 पैसे किलो भी यह पोटेटो खरीदने को कोई तैयार नहीं है। मैं साउथ में गया था। ...(व्यवधान)... हम यह कोई पोलिटिक्स की बात नहीं कर रहे हैं, जो आप हंस रहे हैं। ग्राउंड, धरातल पर जो समस्या है, उसको आप सुनिए। मैं कोई पार्टी-पोलिटिक्स की बात नहीं कर रहा हूँ। यह समस्या आपकी भी है, हमारी भी है। आप यह बताइए कि अगर किसान को उसकी मजदूरी, उसका पैसा, उसकी मेहनत का पैसा नहीं मिलेगा, तो क्या होगा? हमारे देश में हर साल दो करोड़ नौजवान तैयार हो रहे हैं, उनमें किसानों के बच्चे भी होते हैं। देश में जो यह नक्सलिज्म और रीजनल डिस्टर्बेंसेज़ होती हैं, यह उन नौजवानों को गुमराह करके उनके थ्रू ही करवाई जाती हैं, जैसे अभी पंजाब में हुआ। वहां काम न होने की वजह से वहां के नौजवानों में नशे की लत डाल दी गई। झारखंड में, छत्तीसगढ़ में नौजवानों को नक्सलाइट बना दिया गया, गलत रास्ते पर डाल दिया गया। यह एक रूट-कॉज़ है। इसमें हंसने की बात नहीं है। देश के सामने यह एक समस्या है। ठीक है, आप बाद में अपना भाषण करिए, आपको भी समय मिलेगा, लेकिन जो एक समस्या है, उसको समझने की आवश्यकता है कि आज

किसान जो सुइसाइड कर रहा है, वह क्यों कर रहा है? आपके जो बीजेपी शासित प्रदेश हैं, सबसे ज्यादा तो सुइसाइड उनमें हो रही हैं। महाराष्ट्र में हो रही हैं, छत्तीसगढ़ में हो रही हैं। ये क्यों हो रही हैं, किस लिए हो रही हैं? इस पर सोचने की जरूरत है, न कि इसके ऊपर हंसने की आवश्यकता है।

श्रीमान् जी, जब 2014 में आपकी सरकार बनी, तो सरकार बनने से पहले आपने देश के नौजवानों से, देश के लोगों से वायदा किया था कि हम साठ रोज के अंदर पांच करोड़ रोजगार देंगे और हर साल हम दो करोड़ नौजवानों को रोजगार देंगे। मैं सरकार से जानना चाहता हूँ कि क्या आपने अपने इस वायदे को पूरा किया? ठीक है, अगर आपने अपना वायदा पूरा नहीं किया, जो जगजाहिर सत्य भी है, लेकिन आपने इस बारे में क्या स्टेप उठाया? अगर आप कोई रोजगार नहीं दे सके, तो ठीक है कि नहीं दे सके, यह बात समझने की है, लेकिन क्या इस बारे में आपने कोई स्टेप उठाया? आप स्टेप उठाने की बजाय हर दो-तीन महीने में केवल एक नया शगूफा छोड़ देते हैं**,** कोई न कोई एक नई स्कीम बनाकर छोड़ देते हैं और मेन इश्यू को डायवर्ट करते हैं। श्रीमान् जी, हर साल हमारे देश में दो करोड़ नौजवान नौकरी की तलाश में अपने घर से निकलते हैं। मां-बाप अपनी जमीन-जायदाद बेचकर बच्चों को पढ़ाते हैं और सोचते हैं कि हमारे बेटे या बेटी को बड़े होकर रोजगार मिलेगा? क्या इस बारे में सरकार ने कोई कदम उठाया है? मुझे नहीं लगता कि ऐसा कोई कदम आपने उठाया है, जिससे लगे कि आपने इस बारे में ध्यान दिया है। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है, जैसा मैंने पहले कहा, रोजगार न मिलने से समाज में जो एंटी-सोशल एलिमेंट होता है, वह नौजवान को गुमराह करता है, जैसे मैंने आपके सामने दो प्रदेशों का एग्ज़ाम्पल दिया।

देश की आज यह एक बर्निंग प्रॉब्लम है। इस बारे में बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है, वरना स्थिति कंट्रोल के बाहर चली जाएगी।

श्रीमान् जी, माननीय प्रधान मंत्री जी ने "मेक इन इंडिया" का नारा दिया। हम सब लोग सहमत हैं और हमें खुशी होगी कि देश में सामान बने। हमारे देश में जो आज सामान यूज़ हो रहा है, जो इम्पोर्ट हो रहा है, उससे हमारा देश एक डम्पिंग ग्राउंड बन गया है।

(2एच/एकेजी-केएस पर जारी)

AKG-KS/2H/2.30

श्री प्रेम चन्द गुप्ता (क्रमागत) : श्रीमान् जी, आप यह समझिए कि A to Z, दुनिया भर का जो rejected माल है, वह चीन और दूसरे देशों से हम लोग import करते हैं। हमारी जो small and medium industries हैं, आज वे बिल्कुल खत्म हो चुकी हैं। उसका क्या कारण है? आज आप रोजगार की बात करते हैं। हमारी जो small and medium industries हैं, वे क्यों बंद हुई हैं? ये वे लोग हैं, जिन लोगों ने आप लोगों को बनाया, आपको वोट दिया। आपने तो उनके साथ विश्वासघात किया है, आपने उनको चोर बना दिया, उनके ऊपर इंस्पेक्टर राज थोप दिया। क्या हमारा देश एक dumping ground होकर रह जाएगा या आप इसके बारे में कोई सोच-विचार कर रहे हैं? आज आपके तीन साल हो गए, अब जाने का समय आ गया और आप रोज के रोज कोई न कोई नई स्कीम पब्लिक में लाकर दिमाग को divert करने का काम करते हैं। लेकिन जो चीज आपके सामने है, जो स्थिति, जो समस्या आपके सामने है, आज के रोज जो burning problem है, आप उसके ऊपर ध्यान क्यों नहीं देते हैं?

श्रीमान् जी, मैं 'ease of doing business' के बारे में बताना चाहूँगा। जब आप सत्ता में आए थे, उस वक्त 'ease of doing business' में हमारे देश की ranking क्या थी और वर्ल्ड बैंक की रिपोर्ट है कि हिन्दुस्तान 'ease of doing business' में 142वें स्थान पर चला गया है। आप 'Make in India' बोलते हैं। अगर आपके देश में काम करने का, production करने का, फैक्टरी लगाने का कोई माहौल ही नहीं होगा, तो कहाँ से आपके यहाँ investment आएगा और production होगा? मैंने माननीय प्रधान मंत्री जी को कई बार सुना है, मैंने माननीय वित्त मंत्री महोदय को कई बार सुना है, वे 'ease of doing business' की बात करते हैं। निर्मला सीतारमण जी, जो इसकी concerned Minister हैं, मैंने उनको भी सुना है। लेकिन केवल बोलने से 'ease of doing business' नहीं होता है। आपको धरातल के ऊपर माहौल create करना पड़ेगा। आज आपने पूरा इंस्पेक्टर राज कर दिया है। हर चीज इंस्पेक्टर्स के हाथ में है। क्या इसी तरह से कोई इंडस्ट्री लगती है? क्या इसी तरह से job creation होता है? क्या आज सरकार कोई job दे सकती है? सरकार की अपनी limitations हैं।

श्रीमान् जी, आज आप देखते हैं कि सरकार के हर महकमे में vacancy है। दिल्ली यूनिवर्सिटी, दुनिया में जिसका नाम है, आज वहाँ पर professors की vacancies हैं। Students हैं, students धक्के खाते हैं, उनको admission नहीं मिलता है और आप वहाँ vacancy नहीं भर रहे हैं। यह जो विरोधाभास चल रहा है, इसके ऊपर आप लोग क्या कर रहे हैं? ...(समय की घंटी)... इन सबके ऊपर आपने नोटबंदी का जो एक महान step उठाया, श्रीमान् जी, यह एक बहुत बड़ा ill-advised step था। यह step एक ऐसा step था, जिससे आप लोगों ने एक चलती हुई गाड़ी के

टायर को puncture करने का काम किया। दुनिया के बड़े-बड़े Nobel Laureates ने कहा कि इससे बड़ा घातक कोई step नहीं हो सकता। ...(समय की घंटी)... श्रीमान् जी, Miscellaneous Group में 19 मिनट बाकी हैं, अभी तो मेरे 9 मिनट हुए हैं, तो kindly allow me some more time.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: One more speaker is there.

SHRI PREM CHAND GUPTA: He is not here, Sir. Please be kind to me.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay. Then, only one more minute.

श्री प्रेम चन्द गुप्ता : श्रीमान् जी, मैं यह कह रहा था कि यह एक ill-advised step था। देश का हर नागरिक और सारी पार्टियाँ, हम भी चाहते हैं कि black money के ऊपर control हो, black money को control किया जाए, विदेशों से जो नकली currency आ रही है, उसके ऊपर control किया जाए। हम भी चाहते हैं, कौन नहीं चाहता? देश का कौन सा नागरिक ऐसा है, जो यह नहीं चाहेगा? लेकिन श्रीमान् जी, इस काम के लिए आपने जो ill-advised step लिया, ill-planned step लिया, इससे देश का कितना बड़ा नुकसान हुआ है! श्रीमान् जी, मैं आपको बताना चाहता हूँ कि विदेशी tourists, जो 6-6 महीने पहले अपनी booking करते हैं, वे आए और उनको daily सिर्फ 600 रुपए change करना allow किया गया। (2जे/एससीएच पर जारी)

SCH-RSS/2.35/2J

श्री प्रेम चन्द गुप्ता (क्रमागत) : उनको लाइनों में लगना पड़ा। क्या वे लाइनों में लगने के लिए इतना पैसा खर्च करके आए थे?

मान्यवर, स्पेन एक छोटा सा मुल्क है, जिसकी major income और major employment टूरिज्म के ऊपर ही डिपेंड करती है। वहां टूरिज्म उनकी income का सबसे बड़ा स्रोत है। आज हमारे देश में क्या नहीं है? हम अपने देश में टूरिज्म को बढ़ा सकते हैं, लेकिन हो यह रहा है कि टूरिस्ट अपने आप भारत आते हैं, उसमें आज तक किसी भी सरकार का कोई हाथ नहीं रहा है। माफ करना, हमारी सरकार भी रही है और मैं सरकार का हिस्सा भी रहा हूं, लेकिन इस संबंध में किसी ने कुछ नहीं किया। हमारे देश में जो टूरिस्ट आते हैं, वे हमारे monuments, हमारी सभ्यता और संस्कृति को देखने के लिए आते हैं। इसमें किसी भी सरकार का कोई contribution नहीं है। नॉर्मल कोर्स में जो टूरिस्ट यहां पर आ रहे थे, नोटबंदी करके आपने उनके पांव में भी लगाम लगा दी, जिससे उनका पूरा सीज़न ही फेल हो गया। उनको अपने परिवार के साथ, अपने मित्रों के साथ या पत्नी के साथ छुट्टियां बिताने के लिए यहां आना था, लेकिन आप लोगों ने उनके ट्रिप को खराब करने का काम किया।...(व्यवधान)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Now, please conclude.

श्री प्रेम चन्द गुप्ता : श्रीमान्, मैं regional imbalance की बात कहना चाहता हूं। सत्ता में आने से पहले आपने कहा था कि जो पिछड़े हुए राज्य हैं, हम उनको बढ़ावा देने के लिए कारगर कदम उठाएंगे। बिहार और झारखंड देश के पिछड़े हुए राज्यों में आते हैं, लेकिन केवल झूठे वायदे करने के अलावा आप लोगों ने इन राज्यों के लिए कुछ नहीं किया। आप देखिए, झारखंड से पूरे देश को, minerals जाते हैं, बिहार से पूरे देश को manpower मिलती है। पूरी दुनिया में बिहार के लोगों ने जाकर अपना नाम कमाया है। क्या regional imbalance खत्म करने के लिए आपने कोई स्टेप उठाया है? मुझे नहीं

लगता कि आपने regional imbalance को खत्म करने के लिए आज तक कोई भी स्टेप उठाया हो।

श्रीमान्, आपने hi-tech cities की बात की और कहा कि हम 100 शहर ऐसे बनाएंगे, जो hi-tech होंगे। मैं इस पर आपसे यह कहना चाहता हूं कि आपके पास अभी जो so called millennium cities हैं, जहां IT का इतना बड़ा कारोबार होता, लाखों नौजवान लड़के-लड़कियों को वहां रोज़गार मिला हुआ है, लेकिन आपने आज तक वहां के लिए भी कुछ नहीं किया। आप गुड़गांव चले जाइए, अगर किसी रोज़ बरसात हो जाए, तो सड़क के ऊपर चार-चार फीट पानी भर जाता है और आप 100 hi-tech smart cities बनाने की बात करते हैं। Smart cities तो आप बाद में बनाइएगा, आपके पास अभी जो cities हैं, कम से कम पहले उनको तो बचा लीजिए।..(समय की घंटी)...

श्री उपसभापति : ठीक है, अब बस कीजिए।

श्री प्रेम चन्द गुप्ता : श्रीमान्, मैं सिर्फ दो मिनट और लूंगा।

आपने रेलवे की बात की है। 2004-2009 के बीच में रेलवे का असली रूप दुनिया के सामने आया कि किसी प्रकार हमारे देश की रेलवे पैसा कमा सकती है, modernization कर सकती है, expansion कर सकती है। उस रेलवे की आज आपके समय में यह स्थिति है कि उसके पास तनख्वाह देने तक के लिए पैसे नहीं हैं, इसके लिए आप market से पैसे borrow करना चाहते हैं। आप bullet train और tube train की बातें करते हैं, जो 1100 से 1200 किलोमीटर की स्पीड से चलेंगी, लेकिन हमारी जो unmanned crossings हैं, जिनके कारण हर रोज़ दस-बीस लोगों की जानें चली जाती हैं और लाखों रुपयों का नुकसान हो जाता है, उनके लिए आप कुछ नहीं कर पाए।

रेलवे में सेफ्टी की समस्या है, सर्विसिंग की समस्या है, इसके बारे में आप कुछ नहीं कर रहे हैं। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है और मैं चाहता हूं कि इस तरफ आप ध्यान दें।

श्रीमान् जी, मैं एक बात और कहना चाहूंगा। आरक्षण के ऊपर आपके आरएसएस के नेतागण और बीजेपी के लीडर्स बार-बार अटैक करते रहे हैं। आप एक बात बिल्कुल क्लीयरली समझ लीजिए कि आरक्षण के ऊपर किसी भी प्रकार का कोई समझौता नहीं हो सकता है। हम जानते हैं कि आप लोगों को आरक्षण से समस्या है। श्रीमान्, समाज के जो पिछड़े तबके के लोग हैं, उनको भी तो इस देश में जीने का अधिकार है, particularly जो blue blood या ऊंचे तबके के लोग हैं, यह देश खाली उन्हीं लोगों का नहीं है। जो दलित हैं, पिछड़े हैं, मुस्लिम हैं, उन लोगों ने भी देश की आजादी के लिए अपनी कुर्बानियां दी हैं।

श्रीमान् जी, पहले जब बिहार का चुनाव हुआ था, * ने वहां पर बयान दिया कि हम आरक्षण नहीं दे सकते, आरक्षण को निकालना होगा।...(व्यवधान)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN : Okay, now conclude... (Interruptions)...

(Cont. by 2k/kgg-rpm)

RPM-KGG/2.40/2K

श्री ला. गणेशन: उपसभापति महोदय, यह अनावश्यक है। ...(व्यवधान)...

---

* Expunged as ordered by the Chair.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, please conclude.

श्री प्रेम चन्द गुप्ता: श्रीमान् जी, यह तो रिकॉर्ड है। मैं तो ...(व्यवधान)... Sir, it is a matter of record. If you want, I can submit a copy of the newspaper.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, please conclude.

श्री प्रेम चन्द गुप्ता: श्रीमान् जी, अभी जयपुर में आपके दूसरे नेताओं ने बोल दिया। आप क्या बोल रहे हैं? यह नहीं हो सकता। ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: अब आप कन्क्लूड कीजिए। All right. Now, that is okay; please conclude.

श्री प्रेम चन्द गुप्ता: श्रीमान् जी, मैं इसी के साथ सरकार की नीतियों से अपनी असहमति जाहिर करते हुए, आपका धन्यवाद करता हूं।

(समाप्त)

श्रीमती विप्लव ठाकुर (हिमाचल प्रदेश): माननीय उपसभापति जी, मुझे बोलने के लिए समय देने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं महामहिम द्वारा दिए गए अभिभाषण पर धन्यवाद के प्रस्ताव पर बोलने के लिए खड़ी हुई हूं। ...(व्यवधान)...

SHRI LA. GANESAN: Sir, unnecessarily he is mentioning the name of *. It is irrelevant. Why did he mention the name of *? ...(Interruptions)...

---

* **Expunged, as ordered by the Chair**.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Did you mention any name, Mr. Gupta?

SHRI PREM CHAND GUPTA: Yes, Sir.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay, then that is expunged.

SHRI LA. GANESAN: Thank you, Sir. …(Interruptions)…

SHRI B.K. HARIPRASAD: Sir, is it unparliamentary?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No; he can't come and defend himself. You can't mention the name and make an allegation against a person who can't come here and defend himself. He made an allegation, or something like that. The name is expunged. …(Interruptions)..

SHRI B.K. HARIPRASAD: He has not made any allegation, Sir.

SHRI JAIRAM RAMESH: There are so many people who can defend him, Sir! …(Interruptions)…

SHRI B.K. HARIPRASAD: He has not made any allegation, Sir. …(Interruptions)…

SHRIMATI VIPLOVE THAKUR: It is a fact. …(Interruptions)…

MR. DEPUTY CHAIRMAN: In any case, Guptaji, you have attributed a quotation to a person who is not present here. …(Interruptions)… It is objected to as an allegation, or as untrue. I expunge it. …(Interruptions)… You see, there is an objection. An hon. Member says that the allegation is wrong. …(Interruptions)… Mr. Ganesan, do you accept that it is not an allegation? …(Interruptions)… Let him say that. Do you accept that it is not an allegation?

SHRI LA. GANESAN: No, Sir. He has mentioned the name of * and quoted his speech also which is not at all correct. …(Interruptions)…

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That is the point. …(Interruptions)… Okay, Guptaji, let us not dispute over it. Anyhow, you said something against a person who can't come and defend here; he can't explain it here. So, it is expunged. …(Interruptions)…

SHRI JAIRAM RAMESH: So many statements are attributed to Jawaharlal Nehru, to Indira Gandhi and to all departed leaders. They can't come and defend themselves!

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Don't stretch it like that. If you make a quotation about late Smt. Indira Gandhi or Pandit Jawaharlal Nehru, if anybody objects to that saying that such a statement is not correct,

---

* **Expunged as ordered by the Chair.**

then I will take a decision on that. I have to. …(Interruptions)… Let us not argue over it. Since the quotation of Guptaji has been objected to, I have to take cognizance of that. When one Member has said that that statement is wrong and that there is no such quotation, then I have to take cognizance of that. That is what I have done.

KLS-PSV/2L/2.45

MR. DEPUTY CHAIRMAN (CONTD): That is all I have done. …(Interruptions)… Okay, all right. Are you authenticating that he made a statement like this? … (Interruptions)… Are you saying that he made such a statement and you are authenticating that? … (Interruptions)… Then don't say this. …(Interruptions)…

SHRI ANAND SHARMA: Sir, listen to me. …(Interruptions)… Sir, what I am saying is that Shri Prem Chand Gupta has said that he has not made any allegation. Whatever statement was made it has been refuted. …(Interruptions)… What I am saying is both should stay on record. He has said something and he has already refuted it. …(Interruptions)… That is what we are saying. …(Interruptions)…

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That is applicable if the person is present here. …(Interruptions)… The person is not present here. …(Interruptions)…

SHRI JAIRAM RAMESH: Sir, by that logic, you have to expunge what the Prime Minister says. …(Interruptions)…

SHRI PREM CHAND GUPTA: I stated that it is a matter of record. You yourself know it.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: If it is a record, you could have brought it, read it out and authenticated it. You did not do that. …(Interruptions)…

SHRI PREM CHAND GUPTA: I can do it. …(Interruptions)… I can authenticate. …(Interruptions)… So, don't expunge, Sir. Let it be there. …(Interruptions)…

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no, that is expunged. …(Interruptions)… That is expunged.

SHRI PREM CHAND GUPTA: I will authenticate, no problem. …(Interruptions)…

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You come, quote from the record and then authenticate. …(Interruptions)… It is a different matter if you come, quote from a record and authenticate it. Now, you attributed a statement to 'x', which was not refuted here. …(Interruptions)… The 'x' is not present. …(Interruptions)… I have to do that. …(Interruptions)… That is over. …(Interruptions)… It is over. …(Interruptions)… Whatever he has said is on record-- don't worry --except what I expunged. Now Viploveji.

श्रीमती विप्लव ठाकुर (हिमाचल प्रदेश): माननीय उपसभापति जी, मैं महामहिम के अभिभाषण पर बोलने जा रही हूँ। महामहिम का जो अभिभाषण होता है, वह सरकार की पॉलिसीज़ या सरकार की जो नीतियाँ होती हैं, उनका लेखा-जोखा होता है। उपसभापति जी, यह लेखा-जोखा नहीं है, यह जनता को * है।

इस अभिभाषण में कुछ भी नया नहीं है। मैंने सारा पढ़ा, बहुत बार पढ़ा। इसमें क्या है, वही- 'Sit India', 'Stand India', 'Make India', 'स्वच्छ इंडिया'। यानी इंडिया ही इंडिया है, जनता कहीं पर नहीं है, जनता का नाम ही नहीं है। और क्या कहा गया है- हम यह कर देंगे। अरे भाई, जो आपने 2014 में अपने मेनिफेस्टो और भाषणों में कहा, वह तो आप पूरा कर नहीं सके हैं, तो कहाँ से नया करेंगे? जो हमारी नीतियाँ थीं, उनके नाम बदल-बदल के ये लागू किए जा रहे हैं।

---

* **Expunged as ordered by the Chair.**

उपसभापति जी, जब ये प्रधान मंत्री बने, शायद इनको अलादीन का चिराग़ मिल गया, जिसको घिसते ही बिल्डिंग्स खड़ी हो गईं, सड़कें बन गईं, रेलवे लाइनें बन गईं, एयरपोर्ट्स बन गए, हवाई जहाज उड़ने लग गए, साइंस और टेक्नोलॉजी ने इतनी उन्नत्ति कर ली कि मिसाइल्स बनने लग गए, यहाँ तक कि चंद्रयान भी जाने लगे। वह सिर्फ अलादीन के चिराग़ से हुआ। न तो पंडित नेहरू जी ने कुछ किया, न इंदिरा गांधी जी ने कुछ किया, न राजीव गांधी जी ने किया, न नरसिंह राव जी ने किया और न ही इनके वाजपेयी जी ने कुछ किया, जिनको आज तक पूछा नहीं जा रहा है। केवल आज पहली बार जो कुछ किया, वह मोदी जी ने किया। बाकी जो सारा भारत था, बाकी जो सारे नेता थे, वे बिल्कुल आराम से बैठे रहे। उन्होंने 60 साल कुछ नहीं किया। न तो देश को आज़ाद करवाया, न गरीबी के लिए लड़े और न ही भारत को आगे बढ़ाया। आज अगर भारत का नाम है, अगर भारत को पूछा जा रहा था, तो केवल ये कांग्रेस के जो नेता थे, जिनकी विचारधारा थी, जिनकी प्लानिंग थी, उसकी वजह से था, नहीं तो इन लोगों को कोई नहीं जानता था। ये कहाँ से आये, ये कब थे? न तो ये भारत की आज़ादी में थे, न ही भारत को बनाने में थे, लेकिन आज सबसे ज्यादा अपने आपको भारत की जनता का शुभचिन्तक समझते हैं।

(2एम/वीएनके पर जारी)

श्रीमती विप्लव ठाकुर (क्रमागत) : हां, हैं शुभचिंतक। महोदय, इन्होंने एक काम किया, जो नोटबंदी कर दी, जो तुगलकी फरमान जारी कर दिया, रातों-रात नोटों को कागज के टुकड़े बना दिया, यह जरूर इन्होंने किया है। मैं इस पर नहीं जाना चाहती हूँ, क्योंकि इस पर बहुत बोला गया है। सबने कहा है कि इससे कितना काला धन आया, कितनी फेक मनी आई, कितना उग्रवाद रुक गया, इसको सबने बताया है। मैं तो केवल एक बात कहना चाहती हूँ, ये मेरे भाई बैठे हुए हैं, हिन्दू संस्कृति कहती है, जिसके ये बहुत पुजारी हैं, जिसका नाम लेते-लेते ये थकते नहीं हैं, उसी हिन्दू संस्कृति में यह कहा गया है कि बचा कर रखना चाहिए, मुसीबत के समय में काम आएगा। हमारे यहां कुशल गृहिणी उसे कहा जाता था.... शादी होने के बाद जब लड़की विदा होती थी, तो मां उसको एक ही सलाह देती थी, बेटी, घर को बनाए रखना, घर के लिए कुछ बचा कर रखना, पति की जो आमदनी होती है, उसको संभाल कर ठीक ढंग से खर्च करना, फिजूलखर्ची मत करना, कोई पता नहीं, कब मुसीबत के दिन आ जाएं। मेरी बहनों का वही जो पैसा था, उसको भी इन्होंने काला धन साबित कर दिया। उनको लाइनों में खड़ा कर दिया कि जाओ, अपनी उस संस्कृति का जुलूस निकालो, उसे सरेआम बदनाम करो, आपको पैसा बचाने का कोई हक नहीं है। इसको आपने खर्च नहीं किया, यह आप लोगों का कुसूर है, ये इन्होंने किया, ये इन्होंने बताया।

महोदय, आज जनसंख्या इतनी बढ़ती जा रही है, क्या इसमें उसके बारे में कोई उल्लेख है? इतने बड़े अभिभाषण में क्या उसके बारे में कोई सोच है? बिल्कुल नहीं है। यह इसलिए नहीं है, क्योंकि आप कहते हैं कि चार-चार बच्चे पैदा करो, पांच-पांच बच्चे पैदा करो ताकि वह पढ़ न सके, गरीबी की लाइन में लगा रहे और भिखारियों की तरह

सड़कों पर घूमता रहे, उनको शिक्षा नहीं मिल सके। यह आप लोगों की नीति है, यह आप लोगों का माइंडसेट है। इसलिए मैं यह कहना चाहूंगी कि इस अभिभाषण में कुछ नहीं है, न इन्होंने किया है और न करेंगे। हां, नये-नये नारे जरूर लगा देते हैं, कभी कोई नाम दे देते हैं, कभी किसी के बारे में कह देते हैं। गुरु गोबिन्द सिंह जी की ही बात करते.... आप आज इसमें उसका उल्लेख करते हैं, क्योंकि पंजाब में इलेक्शन थे। वैसे इनको उनसे कोई हमदर्दी नहीं है, उनसे कोई लगाव नहीं है। वह गुरु गोबिन्द सिंह जी, जिसने इस देश को बचाने के लिए, हिन्दुओं को बचाने के लिए अपने बच्चों को दीवार में चुनवा दिया था। ये उसका क्या मुकाबला करेंगे, जो इतने-इतने लाखों रुपए के कोट और सूट पहनते हैं, जिनको पता ही नहीं है कि हमें क्या करना है। ये बात करते हैं, ये हमारे ऊपर आरोप लगाते हैं। मैं तो यही पूछना चाहती हूँ कि इन्होंने तीन सालों में किया क्या है? इन्होंने कौन-सा नया काम किया है, कौन-सी नई नीति लाए हैं? विदेश नीति, वह इनकी फेल है। हम चारों तरफ से दुश्मनों से घिरे पड़े हैं। इनकी आर्थिक नीति फेल है। आज इतना ज्यादा आर्थिक बोझ डाल दिया गया है। जीडीपी के बारे में और वक्ता बता चुके हैं, अभी और भी वक्ता बताएंगे कि आपने इसको कहां से कहां पहुंचा दिया है।

आज विदेशों में जाने के लिए किसान रो रहे हैं, मजदूर रो रहे हैं, मेरी बहनें रो रही हैं, बच्चे रो रहे हैं। आप जिस अमेरिका के लिए बात करते थे, उसी ने आज एचबी-। वीज़ा पर रोक लगा करके ऐसा किया है। जिस टेक्नोलॉजी को, जिस आईटी को राजीव गांधी ने आसमान पर पहुंचाया था और जिसकी वजह से आज हमारी कंपनियों

ने विदेशों में अपना स्थान बनाया है, उनको आज बेरोजगारी का सामना करना पड़ेगा। यह आप लोगों की नीतियों की वजह से है। वे कहां बोले?

कह रहे हैं कि सर्जिकल स्ट्राइक की। किसी ने बिल्कुल ठीक कहा कि यह तो इवेंट मैनेजमेंट है, गवर्नमेंट मैनेजमेंट नहीं है। यह तो पब्लिसिटी है। आर्मी ने अब तक कितनी ही सर्जिकल स्ट्राइक्स की होंगी, लेकिन कभी उसका शोर नहीं मचा। आपने तो आर्मी को भी मार्केटिंग का एक हिस्सा बना दिया, उसको भी बेच दिया। हमारे जो सिपाही, हमारे जो जवान बॉर्डर्स पर लड़ते हैं, अपना खून बहाते हैं, उसका भी आपने पब्लिसिटी के द्वारा मज़ाक उड़ा दिया, अपनी शोहरत के लिए, अपने मुँह मियां मिट्ठू बनने के लिए, अपनी बहादुरी दिखाने के लिए। कहां है वह देशभक्ति? है ही नहीं, क्योंकि देश के साथ कभी प्यार रहा ही नहीं। आप भारत की आज़ादी की लड़ाई में नहीं लड़े, देश बनाने में आपका हिस्सा नहीं रहा।

(2एन/एनकेआर-एनबीआर पर जारी)

NKR-NBR/2N/2.55

श्रीमती विप्लव ठाकुर (क्रमागत) : ठीक है, हमारी कुछ गलतियां रहीं, जनता किसी को भी चुन सकती है, किसी को भी वोट दे सकती है। यह उनका अधिकार है और यह अधिकार भी उन्हें कांग्रेस पार्टी ने दिया है, आप लोगों ने नहीं दिया। आज अगर हम वोट देने का हक रखते हैं, इस देश में प्रजातंत्र है, तो कांग्रेस की नीतियों के कारण है। आपका वश चले तो पता नहीं इस देश को कहां ले जाएं! आप लोगों के लिए तो अभी भी डिक्टेटरशिप है, यह खाओ नहीं, यह नहीं पहनो, यहां बैठे रहो, कैबिनेट की मीटिंग में

मंत्रियों को बाहर जाने की इजाज़त नहीं है, मोबाइल यूज़ करने की इजाजत नहीं है।..(व्यवधान).. आप चुप रहिए और सुनिए। जब तक रेडियो में भाषण नहीं कर लेते, टी.वी. में अपना प्रचार नहीं कर लेते, कोई बाहर नहीं जा सकता। जब आपकी पार्टी में ही प्रजातंत्र नहीं है, तो देश में क्या लाएंगे, देश को क्या बनाएंगे?

इसलिए मैं कहना चाहती हूं कि इस देश की हालत समझिए। किसान की हालत समझिए, गरीब की हालत समझिए, मजदूर की हालत समझिए और महिलाओं की हालत समझिए। आज लॉ एंड ऑर्डर कितना खराब हो गया है। जितने केसेज़ रेप के आज बाहर आ रहे हैं, उतने पहले कभी नहीं आए थे। आप कोई भी स्टेट उठाकर देख लीजिए, कहीं अमन-शांति नहीं है। उनमें एक डर है। अब इन्होंने एक नया शब्द चुन लिया है - देशद्रोही। जो इनके खिलाफ बोल दे, जो इनकी नीतियों की आलोचना कर दे, वह देशद्रोही है। उसे अरेस्ट कर लीजिए, केस चला दीजिए। यह एक नया शब्द इन्होंने निकाल दिया है, एक नई परिभाषा दी है। आपको बोलने का हक नहीं है। यदि आप हां में हां मिलाइए, तो बहुत ठीक हैं। अगर आपने गलत को गलत कह दिया तो आप देशद्रोही हो गए, आपके ऊपर मुकदमा चलना चाहिए, आपको जेल में डालना चाहिए। आज लोग ऐसे हालात में रह रहे हैं। यू.पी. में तो एक नया काम आपने शुरू कर दिया है। आपका वहां जो manifesto आया है, आप इसे manifesto में क्यों दे रहे हैं, आप कानून बनाइए, कानून को implement कीजिए। कानून eve-teasing के लिए पहले से मौजूद है, उसे ठीक तरह से लागू कीजिए। पुलिस reforms कीजिए। पुलिस को आधुनिक ढंग के हथियार दीजिए। उन्हें ट्रेनिंग दीजिए। ऐसा कानून manifesto में देने से eve-teasing दूर होने वाली नहीं है। आप mindset चेंज कीजिए। सोशल

stigma को दूर कीजिए। अपने आपको इससे ऊपर उठाइए। पूरे भारत के बारे में सोचिए। जनता के बारे में सोचिए। केवल नारे मत दीजिए। आपके पास कितनी एफ.डी.आई़ज़. आ गई हैं? मैंने खुद अम्बाला में देखा है कि किसान आलू की ट्रॉली लेकर डी.सी. के ऑफिस के सामने बैठ जाते हैं कि तुम इन्हें बेचो। आप कहते हैं कि कुछ हुआ ही नहीं, इसका कोई असर ही नहीं हुआ। कितनी लेबर आज अपने-अपने प्रदेशों में वापस चली गई है, इसका सर्वे करके हमें बताइए, फिर पता चलेगा। क्योंकि हम राज्य सभा के सदस्य हैं, हमें जनता से बात नहीं करनी पड़ती लेकिन लोक सभा के मैम्बर्स या एम.एल.ए. से पूछिए कि जनता क्या हाल करती है? आपके ही एक एम.पी. के साथ कैसा व्यवहार हुआ, जो यहीं जनता के बीच भाषण दे रहे थे। लोगों ने कहा कि अंदर आइए और जूतों से पीटा गया कि तुम नोटबंदी की प्रशंसा करने आए हो, हम इसके कारण आज बेकार हो गए हैं, भूखे मर रहे हैं। इसलिए हकीकत को समझिए और अपने आपको बदलिए। केवल यह मत सोचिए कि यहीं रहेंगे। बड़े-बड़े लोग नहीं रहे, सिकन्दर नहीं रहा, कोई नहीं रहा। हर किसी को जाना पड़ता है। इसलिए अपना समय ऐसी बातों में मत बिताइए बल्कि भारत के लिए कुछ कीजिए, यहां की जनता के लिए कुछ कीजिए। इन शब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव का विरोध करती हूं।

(समाप्त)

(2o/DS पर आगे)